डॉ.पी.एस.पाटील,
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि, कु.नीता लिंगाप्पा चोगले का 'नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ' लघु शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।
तिथि : 29 JUN 1996

(डॉ.पी.एस.पाटील)
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर - ४१६००४

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

डा.आनंद वास्कर,
आचार्य जावडेकर शिक्षणशास्त्र
महाविद्यालय,
गारगोटी, जिल्हा - कोल्हापुर।

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, कु.नीता लिंगाप्पा चौगले ने मेरे निर्देशन में 'नागार्जुन के' रतिनाथ की चाची ' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ ' लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूर्णत: संतुष्ट हूँ।

(डा.आनंद वास्कर)
शोध निर्देशक।

गारगोटी।
तिथि। 29 JUN 1996

प्र स्था प न

"नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ" लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

शोध-छात्रा

(कु. नीता लिंगाप्पा चौगले)

कोल्हापुर।

तिथि -२९- ६ -१९९६।

29 JUN 1996

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

प्राक्कथन

मैंने देहाती दुनिया देखी है। अत: वहाँ के अभाव तथा स्थित समस्याओं का अनुभव कर चुकी हूँ। जब एम.फिल. की उपाधि के हेतु लघुशोध प्रबन्ध के लिए विषय चुनने की बात आयी तो मेरा ध्यान देहाती समस्याओं में अटक गया। अत: मैं सोचने लगी तो अचानक मुझे नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास की याद आयी जो मैंने एम.ए. का अध्ययन करते वक्त पढ़ लिया था। तथा जिसका परिणाम मन पर काफी अर्से तक रह चुका था। कुछ अन्य उपन्यास पढ़ने के बाद मुझे मालूम हुआ कि नागार्जुन हिंदी साहित्य में एक प्रतिभा संपन्न और युगचेतना के प्रति सजग उपन्यासकार हैं। हिंदी आँचलिक उपन्यासों की परंपरा में नागार्जुन का अद्वितीय योगदान रहा है। सामाजिक परिवर्तन, नारी की विविध समस्याएँ, वर्ग-संघर्ष, शोषितों के विद्रोह आदि को उन्होंने अपने उपन्यास में वर्ण्य विषय बनाया है।

अत: मैंने यह तय किया कि क्यों न मैं 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ इस विषय को लेकर ही अपना शोध कार्य पूरा कर लूँ। यह विचार आते ही मैंने अपने निर्देशक के साथ चर्चा की तब आप भी राजी हो गए और मैंने इस विषय को तय करके कार्य प्रारंभ किया।

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया कि क्या अब तक अन्य किसी विद्वान ने इस पर कार्य किया है ? इसकी खोज करने पर मुझे मालूम हो गया कि शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में नागार्जुन जी की सभी उपन्यासों पर आधारित दि.मा.मस्मे जी का शोध-प्रबन्ध 'नागार्जुन के आँचलिक उपन्यासों में समस्याएँ' तथा फडणीस आवटे जी का 'नागार्जुन के उपन्यासों में निम्नवर्ग का चित्रण' लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत हो चुके हैं। लेकिन

नागार्जुन की किसी एक औपन्यासिक कृति पर कोई भी लघु शोध-प्रबन्ध नहीं लिखा गया है। इसलिए मैंने 'नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ' विषय पर अपना लघु शोध-प्रबन्ध लिखना शुरु किया। तब मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये --

(१) क्या नागार्जुन जी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा है ?

(२) इस उपन्यास में किस स्थान, समय तथा परिस्थितियों का चित्रण किया गया है ?

(३) अपने उपन्यास में चित्रित विविध समस्याओं को लेखक ने किस तरह उजागर किया है ?

(४) क्या नारी की विविध समस्याओं को चित्रित करने में लेखक को सफलता मिली है ?

(५) प्रस्तुत उपन्यास में लेखक का उद्देश्य क्या है ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध - प्रबन्ध में किया है। लेकिन इस शोध कार्य के लिए अवश्यक संदर्भ ग्रंथों के लिए मुझे बहुत तक्लीफ हुई। फिर भी मैंने सुनियोजित ढंग से इस लघु शोध-प्रबन्ध को पूरा करने का प्रामाणिक प्रयास किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है --

प्रथम अध्याय - 'रतिनाथ की चाची' में सामाजिक समस्याएँ-नारी-समस्याएँ -

इस अध्याय में मैंने नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याओं को निम्नलिखित विभागों में विभाजित किया है - विधवा समस्या-विवाह समस्या-स्त्री-विक्रय समस्या - नारी द्वारा नारी की उपेक्षा - यौन समस्या - शिक्षा समस्या- अंधश्रद्धा, कुरीतियाँ-धार्मिक शोषण -

पुरुष निष्ठुरता - महाजनी शोषाण - वर्ग संघर्ष - अछूत समस्या - भूकंप, मलेरिया जैसी प्राकृतिक समस्याएँ - पारिवारिक समस्याएँ - अमानवीय कृत्य। इन सभी समस्याओं को प्रस्तुत करके अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय - 'रतिनाथ की चाची' में आर्थिक समस्याएँ-

द्वितीय अध्याय में मैंने नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित आर्थिक समस्याओं को निम्नलिखित पदों में विभाजित किया है -- जमींदारों, महाजनों के द्वारा शोषाण - निरक्षारता - अर्थाभाव और बेकारी, अंधश्रद्धा - बेगार एवं दास प्रथा - प्राकृतिक आपत्तियाँ आदि समस्याओं का अध्ययन करने के उपरान्त अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय - 'रतिनाथ की चाची' में धार्मिक समस्याएँ --

इस अध्याय में मैंने नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास मे चित्रित धार्मिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग किये हैं जैसे कि - भगवान के नाम पर मनमानी वर्ण व्यवस्था और शूद्र - तीज-त्यौहार - पर्व - देव पूजा विधान - धर्म पर व्यंग्य - व्रत वैकल्य - रामायण के प्रति श्रद्धा - मनौतियाँ - स्वार्थी वृत्ति - रीति-रिवाज - धार्मिक आडंबर - काशी की विडम्बना - कुलदेवता, ग्रामदेवता से बिछोट असल - मेला। आदि समस्याओं को प्रस्तुत करने के बाद निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय - 'रतिनाथ की चाची' में सामाजिक अंधश्रद्धा -

इस अध्याय में सामाजिक अंधश्रद्धाओंको प्रस्तुत करते हुए, प्रचलित रूढियाँ - शगुन - अपशगुन - पूजा-पाठ-मनौतियाँ - भूत-प्रेतों में विश्वास - परंपराएँ आदि बातों का विश्लेषाण करके अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय -' रतिनाथ की चाची ' में सांस्कृतिक समस्याएँ --

इस अध्याय के अंतर्गत संस्कृति क्या है ? संस्कृति शब्द का अर्थ भारतीय संस्कृति,आदिका जिक्र करते हुए ' रतिनाथ की चाची ' में चित्रित सांस्कृतिक समस्याओं को निम्नलिखित विभागों में विभाजित किया है - उत्सव, पर्व, त्यौहार - तीर्थाटन। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार --

इसमें प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक विवेचित आदी बातों को सम्मिलित कर निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया है और अंत में मैंने संदर्भ ग्रंथ सूची दे दी है।

मेरे इस लघु शोध-प्रबन्ध की मौलिकताएँ निम्नलिखित है°--

(१) इसमें चित्रित समस्याओं से ग्रस्त चरित्रों को व्यावहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने की कोशिश की है।

(२) उपन्यास में चित्रित समस्याओं का इतना सूक्ष्म अध्ययन किया है कि, मुख्य समस्या के अंतर्गत विविध समस्याओं का विस्तार से उल्लेख किया है।

नागार्जुन के ' रतिनाथ की चाची ' उपन्यास में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने पर पता चलता है कि नागार्जुन हिन्दी साहित्य मे एक प्रतिभा संपन्न और युगचेतना के प्रति सजग उपन्यासकार हैं। हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की परंपरा में नागार्जुन का अद्वितीय योगदान रहा है। सामाजिक परिवर्तन, नारी की विविध समस्याएँ,वर्ग-संघर्ष,शोषितों के विद्रोह आदि को उन्होंने अपने उपन्यास में वर्ण्य विषय बनाया है।

इस शोध प्रबंध में नागार्जुन के उपन्यास में चित्रित मिथिला जनपद में प्रचलित विवाह की कुप्रथाएँ, नारी जीवन की समस्याएँ तथा ग्राम जीवन की आर्थिक और सामाजिक एवं धार्मिक समस्याओं का विविध अंतरंगों के साथ उद्‌घाटित करने का उद्देश्य रहा है। और उसमें उपन्यासकार नागार्जुन सफल हुये हैं।

ऋणनिर्देश

मेरे इस लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने मेरी मदद की है उन सभी को धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

सबसे पहले तो मैं अपनी आदरांजलि अर्पित करते हुए कहती हूँ कि अपने गुरूवर्य श्रद्धेय प्राचार्य डा.आनंद वास्कर जी के आत्मिय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन है। उनका प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन अगर समय पर न मिलता तो मेरे लिए यह कार्य असंभव था। अत: मैं आपकी बहुत ऋणी हूँ। लेकिन उनके ऋण से मैं उऋण होना नहीं चाहती, केवल उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ।

मेरा कोई भी कार्य मेरे माता-पिता के आशिर्वाद के बिना पूरा नहीं होता। उनके आशिर्वाद से ही आज मैंने अपना कार्य सफलता पूर्वक पूरा किया है।

इसके साथ ही मेरे अन्य गुरूवर्य डा.पी.एस.पाटील (विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) डॉ.अर्जुन चव्हाण (अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) जी का मार्गदर्शन भी मुझे मिलता रहा, उन दोनों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मेरे मित्र परिवार में कु.शामला कोळेकर, श्री अरूण अंभिरे, सौ.प्रा.अपर्णा कुचेकर, श्री.भारत कुचेकर और राजरतन जाधव, महेश पाटगे, मेरे अन्य मित्रों ने भी मेरी सहायता की।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

संदर्भ ग्रन्थो के बिना तो कोई भी लघुशोध-प्रबन्ध पूरा नहीं होता। मै शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल सपवेत सभी कर्मचारी वर्ग को धन्यवाद अर्पित करती हूँ, जिनके सहकार्य के बिना यह लघुशोध-प्रबन्ध पूरा न हो पाता ।

साथ ही मैं टंकलेखक श्री बालकृष्ण रा.सावंत(कोल्हापुर) की भी आभारी हूँ ।

अंत में मै इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए मेरा लघुशोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ ।

कोल्हापुर ।
तिथि ।

शोध छात्रा
(नीता लि.चौगले)